हिन्दी और असमिया की समकालीन काव्य संवेदना

(अरुण कमल और नीलिम कुमार की कविताओं के विशेष संदर्भ में)

महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के
एम. फिल. हिन्दी तुलनात्मक साहित्य उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

सत्र
2014-2015

शोधार्थी
सोनी कुमारी सिंह
पंजी. सं. 2014/02/205/028

ज्ञान शांति मैत्री

क्षेत्रीय केन्द्र, कोलकाता
महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय
क्षेत्रीय केन्द्र, ऐकतान, आईए-290, सेक्टर-3,
साल्टलेक, कोलकाता-97, भारत

घोषणा-पत्र

मैं सोनी कुमारी सिंह घोषणा करती हूँ कि मेरे लघु शोध प्रबंध का विषय 'हिन्दी और असमिया की समकालीन काव्य संवेदना' (अरुण कमल और नीलिम कुमार की कविताओं के विशेष संदर्भ में) है। यह लघु शोध मेरे द्वारा संग्रहित तथ्यों पर आधारित है तथा यह मेरा मौलिक कार्य है। यह शोध कार्य मैंने डॉ. कृपाशंकर चौबे, एसोसिएट प्रोफेसर/ प्रभारी, कोलकाता केन्द्र के निर्देशन व मार्गदर्शन में पूरा किया है। मैं घोषणा करती हूँ कि इस लघु शोध प्रबंध को पूरा करने में मैंने विश्वविद्यालय के शोध संबंधित नियमों का पालन किया है।

स्थान : **कोलकाता**
दिनांक : 16.11.2015

सोनी कुमारी सिंह
एम. फिल. तुलनात्मक साहित्य
पंजी.सं.-2014/02/205/028

आभार

एक निश्चित अवधि में प्रस्तुत शोध कार्य को पूर्ण करना मेरे लिए कदाचित संभव न होता यदि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कुछ लोगों का सहयोग न मिला होता।

सबसे पहले मैं महात्मा गाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, कोलकाता के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिसने मुझे शोध कार्य का सुअवसर और एक सुव्यस्थित शैक्षणिक परिवेश प्रदान किया जिससे मेरा शोध कार्य सम्पन्न हो पाया।

मैं, अपने शोध निर्देशक डॉ. कृपाशंकर चौबे, एसोसिएट प्रोफेसर/ प्रभारी के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने विषय चयन एवं शोध प्रबंध लेखन के दौरान पग- पग पर मुझे स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्रदान किया।

मैं, प्रोफेसर चन्द्रकला पाण्डेय के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने शोध- कार्य के दौरान मेरा उत्साहवर्धन एवं स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन कर प्रकारांतर से मुझे संबल प्रदान किया।

साथ ही असिस्टेंट प्रो. अमित राय के प्रति भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर शोध-कार्य के दौरान मेरा यथोचित उत्साहवर्धन किया।

मैं अपने मित्रों एवं सहपाठियों के प्रति आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिनके सहयोग ने शोध कार्य को पूर्णता प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।

स्थान : **कोलकाता** **सोनी कुमारी सिंह**

दिनांक : 16.11.2015

विषयानुक्रमणिका

भूमिका

प्रथम अध्याय : 1–26

हिन्दी और असमिया भाषाओं का तुलनात्मक परिचय

द्वितीय अध्याय : 27–61

हिन्दी की समकालीन काव्य संवेदना और अरुण कमल

तृतीय अध्याय : 62–86

असमिया की समकालीन काव्य संवेदना और नीलिम कुमार

चतुर्थ अध्याय : 87–146

अरुण कमल और नीलिम कुमार की कविताओं का तुलनात्मक अंतर्वस्तु विवेचन

4.1 अरुण कमल की कविताओं में स्त्री

4.2 नीलिम कुमार की कविताओं में स्त्री

4.3 अरुण कमल की कविताओं में समाज

4.4 नीलिम कुमार की कविताओं में समाज

4.5 अरुण कमल की कविताओं में प्रकृति

4.6 नीलिम कुमार की कविताओं में प्रकृति

4.7 अरुण कमल की छोटी कविताएँ

4.8 नीलिम कुमार की छोटी कविताएँ

4.9 विविध

उपसंहार 147

सहायक ग्रंथ सूची 148–151

भूमिका

समकालीन कविता के जनमुखी, जन सरोकारी विशेषताओं ने मुझमें समकालीन कवियों को पढ़ने की ललक जगायी, इसी कारण मुझमें पड़ोसी भाषाओं बांग्ला और असमिया की समकालीन कविता को पढ़ने की उत्सुकता भी जगायी। मैंने तुलनात्मक साहित्य को शोध का विषय करने की दिशा में अरुण कमल (हिन्दी) और नीलिम कुमार (असमिया) की कविताओं में एक विशेष प्रकार का साम्य देखा विशेषत: अंतर्वस्तु की दृष्टि से।

पूर्वोत्तर की रचनाओं को जब मैंने चुना, तो मुझे ऐसा लगा कि यह भले ही सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक दृष्टि से पृथक है लेकिन एक भारत का दिल वहां भी धड़कता है। हम अनुवाद के माध्यम से अपरिचय की दीवारों को तोड़कर वहाँ के परिवेश से परिचित हो पाते हैं। अंधेर रूपी जो खाई छिपी है वह हमें साफ-साफ दिखायी पड़ने लगती है और हम उसे नग्न दृष्टि से देख पाते हैं। अनुवाद इस सदी की सबसे बड़ी उपलब्धि है जिसके कारण हम अपरिचित रूपी गड्ढों को आत्मीयता से भर पाते हैं। जिनसे हम बिल्कुल अछूते हैं- वहाँ अनुवाद ही हमारा मार्गदर्शक बनता है, दोनों किनारों को जोड़कर एक किनारे से दूसरे किनारे तक जाने के लिए सेतु का निर्माण अनुवाद ही करता है। मैंने अनुवाद के माध्यम से ही पूर्वोत्तर की सभ्यता, संस्कृति के बारे में जाना।

मेरे इस लघु शोध प्रबंध का शीर्षक है- 'हिन्दी और असमिया की समकालीन काव्य संवेदना' (अरुण कमल और नीलिम कुमार की कविताओं के विशेष संदर्भ में)। इन दोनों भाषाओं का परिवेश अलग-अलग है। ये दोनों अलग-अलग परिवार की हैं। हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा है तथा असमिया, पूर्वोत्तर के असम राज्य में बोली जाने वाली भाषा है।

इस लघु शोध का पहला अध्याय है, 'हिन्दी और असमिया भाषाओं का तुलनात्मक परिचय।' इसमें हिन्दी भाषा के उद्‌भव और विकास के साथ-साथ असमिया

भाषा के साथ उसके संबंध को दर्शाया गया है।

दूसरा अध्याय है, 'हिन्दी की समकालीन काव्य संवेदना और अरुण कमल' जिसमें समकालीन कवियों में अरुण कमल के स्थान को उजागर किया गया है और उनकी कविताओं की भी व्याख्या की गयी है।

तीसरा अध्याय 'असमिया की समकालीन काव्य संवेदना और नीलिम कुमार' जिसमें असमिया के समकालीन कवि नीलिम कुमार की कविताओं की व्याख्या करते हुए समकालीन कवियों में उनकी अलग पहचान को रेखांकित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय है- दोनों कवियों की कविताओं का तुलनात्मक अंतर्वस्तु विश्लेषण। यह पाँच उप अध्यायों में विभक्त है- 1. स्त्री 2. समाज 3. प्रकृति 4. छोटी कविताएं 5. विविध

इसमें पहले उप अध्याय स्त्री में अरुण कमल ने अपनी कविताओं में स्त्री को किस रूप में चित्रित किया है और नीलिम कुमार ने अपनी कविताओं में किस रूप में चित्रित किया है, इसका वर्णन किया गया है। दूसरे अध्याय समाज को दोनों कवियों ने किस प्रकार चित्रित किया है, इसका वर्णन है। तीसरे अध्याय प्रकृति को दोनों कवियों ने अपने- अपने नजरिये से देखा है। चतुर्थ उप अध्याय छोटी कविताएँ हैं जिसमें दोनों कवियों ने छोटी कविताओं के माध्यम से बहुत बड़े-बड़े प्रसंगों को उठाया है। पंचम उप अध्याय है विविध या जिसमें इन सब अध्यायों के अलावा कवियों की दृष्टि और भी किन सारी चीजों पर गयी है, उसका वर्णन किया गया है।